तर्ज--घर आया मेरा परदेसी

प्रीत पिया की सुखदायी
झूठी ये माया नही भायी

1--सतगुरू बन प्रीतम आए,
अर्श खजाना संग लाए
सुध आ गयी अपने घर की,
जाग उठी आतम मेरी

2--अब तो निजघर है जाना,
पिया के चरणों में बस जाना
वाणी सुनी हुई दिवानी,
भूल गयी माया फानी

3--पिया संग फिर से झीलेगीं,
एक दूजी के संग झूमेगी
नवरंग बाई नाचेगी,
जुगल जोड़ी बीच सोहेगी

Nijanand App